E: ISSN NO.: 2349-980X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

महाभारत कथा के समसामयिक सरोकार

वीरेन्द्र भारद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी कालेज,
दिल्ली, भारत

सारांश

समकालीन भारतीय समाज अनेक द्वन्दों और चुनौतियों से जूझ रहा है। तकनीक के क्षेत्र में निरन्तर हो रहे विकास ने जहाँ एक ओर परम्परागत समाज को चुनौती दे दी है वही उपभोक्तावाद, बाजारवाद, विभिन्न विमर्श मल्टीनेशनल कम्पनियां देश के सम्मुख विकास की नए अर्थ और मार्ग खोले खड़े हैं। समाज की इस सारी हलचल की गूंज साहित्य में सुनायी पड़ रही है।

मुख्य शब्द : व्यक्ति, परिवार, जाति, धर्म, क्षेत्रियता, भाषा, परम्परा

प्रस्तावना

कविता सदैव अपने समय का दस्तावेज रही है। प्रेमचंद ने तो कहा ही है कि ''साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं दीपक भी होता है।'' इस अर्थ में कविता का अपने समय के सरोकारों से गहरा रिश्ता होता है। समकालीन भारतीय समाज अनेक द्वंद्वों एवं चुनौतियों से जुझ रहा है। विज्ञान के निरंतर विकास और ग्लोबल विलेज की धारणाओं ने एक ओर परंपरागत समाजों को नए सिरे से सोचने को प्रेरित किया है तो दूसरी ओर उपभोक्तावादी–बाजारवादी तन्त्र के अत्यंत मजबूत स्थिति में आ खड़े होने से अनेक नयी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियां भी चिंतन के सम्मुख उत्पन्न हुई हैं। महाभारत प्राचीन भारतीय साहित्या का प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें अपने युग की समस्याओं और द्वन्द्वों को गहराई से उद्घाटित किया गया है। विश्व साहित्य की धारा में कुछ रचनाओं ने मनुष्य जीवन और उसके चिंतन को अत्यंत गहरे से प्रभावित किया है। जीवन के प्रति इसी दूर दृष्टि के कारण ये रचनाएँ अपना कालजयी स्वरूप ग्रहण कर लेती है। महाभारत भारतीय साहित्य का ऐसा ही ग्रंथ है। इसका कथानक और उसके पात्रों के द्वन्द्व आज के सामाजिक द्वन्द्वों एवं चिंतन सरणियों के काफी निकट पड़ते हैं। इसलिए महाभारत कथा ने आधुनिक कवियों को भी अपने युग की समस्याओं के हल ढूंढ़ने को प्रेरित किया है। महाभारतीय चिंतन की प्रासंगिकता के कारण ही आधुनिक युग में – कुरुक्षेत्र, अंधायुग, रश्मिरथी, अंगराज कर्ण, एकलव्य, द्रौपदी, जैसी रचनाएँ प्रकाश में आई हैं। अपने युग को आज की चेतना के स्तर पर नयी रोशनी प्रदान करने वाली इन रचनाओं को ही प्रस्तुत शोध पत्र में आधार ग्रंथ के रूप में विवेचित किया गया है।

वर्तमान भारतीय समाज के प्रमुख द्वन्द्व और चुनौतियों को निम्नलिखित प्रमुख बिन्दुओं द्वारा रेखांकित किया जा सकता है।

सामाजिक द्वन्द्व और चुनौतियां

वर्तमान भारतीय समाज– व्यक्ति, परिवार, जाति, धर्म, क्षेत्रियता, भाषा, परम्परा, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं, आदि अनेक स्तरों पर विभाजित दिखायी देता है। जिस प्रकार महाभारत में युद्ध के बाद निराशा और अंधकार का वातावरण था, उसी प्रकार आज का गनुष्य चिंतन के स्तर पर विभिन्न आस्थाओं, मनोवृत्तियों के निरंतर विकृत होते जाने से चिंतित है–

युद्धोपरांत
यह अंधायुग अवतरित हुआ
जिसमें स्थितियां, मनोवृत्तियां, आत्माएं सब विकृत है।
पर शेष अधिकतर है अंधे
पथभ्रष्ट, आत्महारा, विगलित
अपने अंतर की अंधगुफाओं के वासी
यह कथा उन्हीं अंधों की है
या कथा ज्योति की है, अंधों के माध्यम से[1]

स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं का अन्धकार

कवि आज के समाज में स्वार्थ के निरंतर हावी होते जाने से निराश है। आज का मनुष्य अपने बहुत सारे कर्मो के प्रति खुद उत्तरदायी नहीं होना चाहता। वह अपने कार्यों को किसी न किसी तरह हेतु से जोड़कर उसे वैसे ही जस्टीफाई करना चाहता है जैसे महाभारत कालीन पात्र धृतराष्ट्र और अश्वत्थामा करते हैं। आज के अतिमहत्त्वाकांक्षी, मर्यादाहीन, स्वार्थी आत्मघाती मानव के प्रतिनिधि, धृतराष्ट्र और अश्वत्थामा के इसी मानसिक द्वन्द्व ने जीवन को निरंतर जटिल बनाया है। कवि धृतराष्ट्र के माध्यम से संकेत करता है कि–

कौरव जो मेरी मांसलता से उपजे थे।
वे ही थे अंतिम सत्य
मेरी ममता ही यहाँ नीति थी
मर्यादा थी।[2]

दलित विमर्श

भारतीय समाज का प्राचीन रूप वर्णाश्रम धर्म पर आधारित था। 'कर्म' चार वर्णों के विभाजन का आधार था। वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) की जो कर्माधारित योजना मनुस्मृति में की गयी थी, काल के दुष्चक्र ने वह पूरी तरह छिन्न भिन्न कर दी। कर्माधारित वर्णव्यवस्था अपनी पूरी भयावहता के साथ जन्माधारित, जाति व्यवस्था में बदल गयी। कर्म और प्रतिमा पूर्णतः अप्रासंगिक हो गए। समकालीन संदर्भो में भारतीय समाज दलित और गैरदलित के रूप में प्रमुखतः विभाजित है। यह व्यवस्था जन्माधारित जाति व्यवस्था को और अधिक मजबूत करती है। भारतीय सामाजिक – राजनीतिक नेतृत्व का मत है कि दलित वर्ग की इस चिंताजनक हालत का प्रमुख कारण सभी को समान सुविधाओं के साथ समान अवसर का नहीं मिलना है इसलिए सामाजिक न्याय के इस संघर्ष में दलित वर्ग के लिए विशेष अवसर उपलब्ध करवाने पर जोर दिया जा रहा है।

महाभारत के दानवीर कर्ण और एकलव्य का चरित्र आज के दलित विमर्श के केन्द्र में है। कुंती की विवाह पूर्व सूर्य से उत्पन्न संतान–कर्ण का चरित्र, जाति व्यवस्था के इसी दुष्चक्र का शिकार हुआ है।

कृपाचार्य द्वारा जाति पूछने पर आज के दलित वर्ग का प्रतिनिधि पात्र कर्ण प्रत्युत्तर देता है–

जाति हाय री जाति,
कर्ण का हृदय क्षोभ से डोला
कुपित सूर्य की ओर देख
वह वीर क्रोध से बोला...
जाति – जाति रटते,
जिनकी पुंजी केवल पाखंड,
मैं क्या जानूं जाति ?
जाति है ये मेरे भुजदण्ड।[3]

21 वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में कहा जाय तो राजनीतिक स्तर पर इस जाति व्यवस्था को तोड़ने के अनेक प्रयत्न किए, पर वे सभी केवल आर्थिक सम्पन्नता के रास्ते अपनी और अपनी समकक्ष जातियों में श्रेष्ठता प्राप्त करने के मन्त्र सिद्ध हुए। मंडल कमीशन, सामाजिक न्याय, बहुजन समाज, जैसे दलित विमर्श सम्बंधी नारे जमीनी धरातल पर बहुत कुछ करने में विफल रहे है। जाति उद्धार के नाम पर किए गए अधिकतर जन आन्दोलन अंततः सत्ता प्राप्ति के साधन सिद्ध हुए। भारत की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जाति के नाम पर राजनेताओं ने अनेक ऐसे पार्टीनुमा दुर्ग बना लिए जिन्हें भेदना आज के कवियों– समाज चिंतकों के लिए भी लगभग असंभव हो गया। किन्तु लोकतांत्रिक व्यवस्था का यह सुखद पहलू है कि दलित विमर्श के वर्तमान चिंतन ने समाज के पिछड़े वर्गों में चेतना की एक नयी धारा का सूत्रपात किया है। दीगर बात है कि अभी तक किसी भी ऐसे सामाजिक नेतृत्व का अभाव रहा है जो भारतीय समाज का सर्वस्वीकार्य नेता हो। वर्तमान सामाजिक, संवैधानिक, व्यवस्था की असफलता का चरम उदाहरण है कि देश का राष्ट्रपति, मन्त्री, मुख्यमंत्री बनने के बावजूद भी व्यक्ति (शिखर पुरूष) अपने 'दलितत्व' से मुक्त नहीं हो पाता। 21 वीं सदी के भारत में धर्म बदलना संभव है किन्तु जन्म आधारित जाति बदलना संभव नहीं। वास्तव में यह जन्माधारित जाति को ही जिंदा रखने का व्यवस्था का दुष्चक्र है। कर्मवादी व्यवस्था का पक्षधर कवि इसके प्रति सावधान करता हुआ युग को नई रोशनी देता है–

पाते है सम्मान तपोबल से भूतल पर शूर
जाति–जाति का शोर मचाते केवल कायर क्रूर
बड़े वंश से क्या होता है, खोटे हो यदि काम?
नर का गुण उज्ज्वल चरित्र है, नहीं
वंश–धन–धाम[4]

कवि व्यवस्था के इस वर्तमान स्वरूप को तोड़ना चाहता है क्योंकि यहाँ पर कर्म और प्रतिभा पूर्णतः अप्रासंगिक हो गए–

समस्त शास्त्रज्ञाता
पाण्डित्य और तेजस्विता के बाद भी
यशस्वी द्रोणाचार्य
अपनी एकमात्र संतान को
दूध तक न उपलब्ध करवा सके।[5]

21वीं सदी के बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधि पात्र

द्रोणाचार्य ने जब त्याग, तपस्या, बलिदान, अहिंसा, क्षमा जैसे मूल्यों को छोड़ कर सत्ता का दामन थाम लिया, तो उनका विवेक, शौर्य, मर्यादा, बुद्धि, नीति सब विगलित हो गए। अभिमन्यु वध में उनकी भूमिका इसी तथ्य की ओर संकेत करती है। कवि इस विषमता मूलक समाज को मिटा देना चाहता–

शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख भाग न नर का सम हो
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो [6]

वास्तव में कवि कर्माधारित व्यवस्था का ही पक्षधर है जहाँ पर व्यक्ति अपनी रूचि और योग्यता के अनुसार अपना कर्म करता हुआ समाज के विकास में योगदान देता है। क्षत्रिय गुणों से सम्पन्न व्यक्ति सेना में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है किन्तु शिक्षा अथवा साहित्य में नहीं। इसी प्रकार प्रेम ओर सौन्दर्य पूर्ण कोमल भावनाओं का चितेरा कवि–कलाकार सेना में उतना सफल नहीं होगा। यही कर्माधारित व्यवस्था का मूल मन्त्र था। जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है इसकी सफलता के रास्ते में सबसे बड़ा द्वन्द्व और चुनौती है–सामाजिक

सांस्कृतिक, आर्थिक संसाधनों एवं अवसरों का असमान वितरण। जिसे उचित दूरदर्शी निर्णयों द्वारा ही मिटाया जा सकता है।

नारी विमर्श

नारी सदैव ही भारतीय साहित्य और समाज चिंतन के केन्द्र में रही है। महाभारत में नारी के अनेक रूप दिखायी पड़ते है। द्रौपदी के चरित्र में नारी – अपमान और उसकी विवशता तथा दण्ड देने की दृढ़ता स्पष्ट नजर आती है। कुंती विवाह पूर्व संतान उत्पन्न करने वाली ऐसी माता है जिसे अपने ही पुत्र धर्मराज युधिष्ठर के श्राप का भागी बनना पड़ता है। गांधारी पुत्र मोह से पीड़ित ऐसी नारी है जो अपने सौ पुत्रों को खोकर, कृष्ण को दंड देकर स्वयं भी पश्चापात करती है–

कर देते शाप यह मेरा अस्वीकार
तो क्या मुझे दुख होता?
मैं तो निराशा में कटु थी
पुत्रहीना थी[7]

वस्तुतः 21वीं सदी में बदलते नारी चिंतन ने भारतीय समाज को नयी दिशा दी है। नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे आयी है। इसलिए नारी के चरित्र के उत्कर्ष को प्रतिष्ठित करने हेतु अनेक काव्य रचनाएँ भी प्रकाश में आई है। द्रौपदी काव्य की भूमिका में कवि ने नायिका को प्रेरणादायनी शक्ति का दृप्त–दीप्त प्रतीक माना है। 'सेनापति कर्ण' काव्य में नारी को युद्ध में भाग लेने वाली विरांगना के रूप में चित्रित किया गया है जबकि पांचाली काव्य की नायिका द्रौपदी स्त्रीत्व एवं मर्यादा की रक्षा को सर्वोपरि मानती है। कुंती मातृत्व द्वन्द्व की वेदना से पीड़ित है। जबकि महाप्रस्थान के कवि नरेश मेहता के अनुसार "प्रत्येक अग्निपरीक्षा के बाद नारी पुरूष के लिए और भी अप्राप्त हो जाती है"। इस प्रकार उपरोक्त विवेचित काव्यों में नारी उत्कर्ष के विभिन्न आयामों को देखकर कहा जा सकता है कि आज की भारतीय नारी भविष्य की उज्ज्वल गाथा लिखने को तत्पर है। वह आज शिक्षा, टेक्नोलॉजी, धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, आदि सभी क्षेत्रों में चरम को छू रही है। स्त्री सशक्तिकरण के इस दौर में राजनीतिक स्तर पर महिला आरक्षण बिल एक सशक्त राजनीतिक निर्णय का इंतजार कर रहा है।

सांस्कृतिक द्वन्द्व और चुनौतियाँ

21वीं सदी के समसामयिक सन्दर्भो में 'ग्लोबलाइजेशन' और 'इन्फोर्मेशन' हाइवे की तेज आंधी ने परम्परागत धर्म, दर्शन, सांस्कृतिक मूल्यों के सम्मुख अनेक प्रश्न खड़े कर दिए। विज्ञान ने जितनी तत्परता से प्राचीन परम्परागत चिंतन का खोखलापन उजागर किया उतनी दृ ढ़ता और संवेदनपूर्ण तर्कशीलता के बल पर सर्वग्राह्य स्थापनाएं नहीं कर पाया। सांस्कृतिक ह्रास की यह चेतना गांधारी के चरित्र में प्रतिबिम्बित होती है।

मैनें यह बाहर का वस्तु जगत
अच्छी तरह जाना था
धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब है
केवल आडम्बर मात्र,
मैने यह बार–बार देखा था[8]

वस्तुतः भीड़ में भी अकेलेपन का अहसास करवाने वाली इन अस्तित्ववादी, अनास्थावादी दुष्प्रवृत्तियों ने आधुनिक मानव को निपट अकेला कर दिया है। उसे लगता है कि दुनिया की सारी, संयम, सहिष्णुता, नैतिकता, उसी पर थोपी जा रही है। 21वीं सदी का व्यक्ति स्वगत महत्वकांक्षाओं के बवंडर में ऐसा उलझा है कि वह धर्म दर्शन, समाज, नीति, राजनीति और भ्रष्टाचार की नयी–नयी ऐसी व्याख्याएँ गढ़ लेता है जो समाज द्वारा अनुमोदित नहीं होती। परिणाम में समाज में निराशा और वितृष्णा का वातावरण फैलता है।

शिक्षा के क्षेत्र में आज के गुरू–शिष्य संबंधों के बदलते स्वरूप को भी महाभारत प्रेरित काव्यों के माध्यम से समझा जा सकता है। गुरू अथवा आचार्य ने जिस शिष्य को सबसे अधिक धर्म दर्शन का ज्ञान दिया, 'धर्मराज' बनाया वहीं शिष्य गुरू के विरूद्ध षड्यंत्रों में मुख्य भूमिका निभाता है। गुरू से छल करता है और चिंतन के स्तर पर अंधप्रवृतियों का अंधकार और गहरा जाता है। युधिष्ठर पर अश्वत्थामा कटाक्ष करता है–

धर्मराज होकर वे बोले
'नर वा कुंजर
मानव को पशु से
उन्होंने पृथक नहीं किया।[9]

वास्तव में यह धर्म की परिस्थिति– प्रसंगानुसार की गयी व्याख्या की घटना है जहाँ धर्मानुसार साधन की शुद्धता, सिद्धांत व मूल्यों की प्रतिबद्धता तथा लक्ष्य की महानता हेतु किए गए निष्काम कर्म की भावना का विलोप होता है।

राजनीतिक संदर्भ

21वीं सदी के भारत के राजनीतिक संदर्भो में भी सबसे चर्चित विषय– धर्म और जाति ही बने हैं। वर्तमान दौर में धर्म को लेकर विशेष बहस चल रही है। एक वर्ग तुष्टिकरण के नाम पर अल्पसंख्यकवाद को बढ़ावा देता है और दूसरा बहुसंख्यको की उपेक्षा के नाम पर इतिहास के गड़े मुर्दो को उखाड़ कर सीधा खड़ा करने का झूठा दम्भ भरता है। राजनीतिक नेतृत्व के विवादित एवं भ्रमित करने वाले निर्णयों के कारण आतंकवाद जैसी अतर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति ढुलमुल रवैया अपनाया जाता है, और भारत को एक सॉफ्ट स्टेट करार दिया जाता है जबकि कवि का मानना है कि धर्म का स्थान सत्ता– सिंहासन से बहुत ऊपर होता है।

धर्म का उत्स
राज्य में नहीं
जाति की प्रज्ञा से होता है [10]

वह 'सर्वे भवन्तु सुखिनाः' का वाहक होता है इसलिए कृष्ण कहते है कि'–

राज्य के नहीं
धर्म के नियमों पर समाज आधारित है
धर्म और विचार को
स्वतन्त्र रहने दो पार्थ [11]

21वीं सदी के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भो में विभिन्न राष्ट्रों द्वारा साम्राज्यवादी नीतियों का विस्तार निरन्तर जारी है। बाजारवादी– सूनामी के कारण केवल उसके सन्दर्भ और सरोकार बदले हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में अमेरिका द्वारा इराक पर हमला, उत्तर कोरिया, पाकिस्तान जैसे राष्ट्रों का परमाणु शक्ति संपन्न होना,

अफगानिस्तान जैसे देशों में हिंसा और आतंकवाद का निरंतर फलना – फूलना आज के भारतीय सामाजिक चिंतकों की प्रमुख चुनौतियां है। रचनाकार का स्पष्ट मत है कि परमाणु प्रसार, युद्ध अथवा हिंसा अपनी अंतिम परिणति में विवेकपूर्ण सद्भावनाओं के प्रति षडयंत्र ही है। 'अंधायुग में धर्मवीर भारती अश्वत्थामा द्वारा आज के परमाणु बम (ब्रह्मास्त्र) के प्रयोग को विवेकहीन पशुप्रवृत्ति का ही परिणाम मानता है। इतिहास में हिरोशिमा और नागासाकी की त्रासदी का उदाहरण हमारे सामने है। कवि हिंसा अथवा युद्ध में केवल अंधेपन की ही विजय देखता है–

यह अजब है, नहीं किसी की भी जय
दोनों ही पक्षों को खोना ही खोना है
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन[12]

अध्ययन का उद्देश्य

हिंदी सहित्य की अनेक विधाओं में समाज की चुनौतियों का प्रतिकार करने के लिए आज का साहित्यकार प्रतिबद्ध है। वर्तमान हिंदी साहित्य कार अपने युग के दर्शन जीवन के अँधेरे कोनों में प्रकाश की किरण फैलाना चाहता है, और पाठक को एक ऐसे आंदोलन की ओर प्रेरित करना चाहता है जिसमे सबके कल्याण की भावना का संचार हो।

निष्कर्ष

21वीं सदी के भारत ने जहां एक ओर 'ग्लोबल विलेज' के परिप्रेक्ष्य में, सूचना क्रान्ति के इस दौर में टेक्नॉलाजी, शिक्षा, इकॉनोमी, रक्षा, अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में बेमिसाल तरक्की की है।

वहीं दूसरी ओर वर्तमान भारत प्राचीन परम्परागत समस्याओं के द्वन्द्व से भी निरंतर जूझ रहा है। आज जन्माधारित जाति व्यवस्था का हर क्षेत्र में वर्चस्व कायम है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, भ्रष्टाचार के बल में फँसा राजनीतिक नेतृत्व अपनी वोट बैंक की चिंता के कारण धर्म और जातिगत तुष्टिकरण की नीति से बुरी तरह जकड़ा हुआ है। कोई भी नेता अथवा दल समान शिक्षा व्यवस्था, नारी समानता, भ्रष्टाचारी व्यवस्था का अंत, आतंकवाद पर धर्म और संप्रदाय से उपर उठकर राष्ट्रवादी चिंतन के तहत प्रहार करने किसान मजदुर का उद्धार करने तथा विकास के बुनियादी ढाँचे का ईमानदारी से निर्माण करने को तत्पर नहीं दिखाई पड़ता। महाभारत प्रेरित उपरोक्त अनेक काव्यों में अपने युग के समक्ष उपस्थित इन चुनौतियों का डटकर प्रतिकार किया गया है। वर्तमान हिन्दी काव्य चिंतन और अनुसंधान अपने युग की इन समस्याओं का हल ढूंढने के प्रति प्रतिबद्ध नजर आता है। कवि समाज के अंधेरे कोनों में प्रकाश की किरण फैलाना चाहता है। वह किसी ऐसे सामाजिक आंदोलन की ओर प्रेरित करता है, जिसमें सबके कल्याण की भावना का संचार हो, नियतिवाद की अपेक्षा कर्मवादी चिंतन पर जोर हो क्योंकि –

जब कोई मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है
नियति नहीं है पूर्व निर्धारित
उसको हर क्षण मानव निर्णय बनाता मिटाता है[13]

कवि समाज के हताश–निराश, भटके हुए युवा वर्ग के प्रतीक अश्वत्थामा को आस्था का सिक्का प्रदान करता है। वास्तव में यह मानव और उसकी शक्ति के प्रति परम्परागत भारतीय आस्थावान चिंतन के अटूट विश्वास की घटना है जहाँ कवि उद्घोषणा करता है कि–

मुझे मनुष्य में विराजे देवता में
सदा विश्वास रहा है
इस देवता के जागृत होने की प्रतीक्षा में
मैं अनन्त काल तक
प्रतीक्षा कर सकता हूँ भीम[14]

सारांशतः भारतीय चिंतक समाज के उज्ज्वल भविष्य को लेकर आशान्वित है।

संदर्भ

1. *भारती, अंधा युग, 1988, पृष्ठ 012*
2. *भारती, अंध युग, 1988, पृष्ठ 020*
3. *दिनकर, रश्मिरथी 1975, पृष्ठ 13*
4. *दिनकर, रमिश्रथी 1975, पृष्ठ 14*
5. *मेहता, महाप्रस्थान, 1975, पृष्ठ 097*
6. *दिनकर, कुरुक्षेत्र, 1966, पृष्ठ 025*
7. *भारती, अंधा युग, 1988, पृष्ठ 103*
8. *भारती, अंधा युग, 1988, पृष्ठ 023*
9. *भारती, अंध युग, 1988, पृष्ठ 037*
10. *मेहता, महाप्रस्थान 1975, पृष्ठ 098*
11. *मेहता, महाप्रस्थान, 1975, पृष्ठ 098*
12. *भारती, अंधा युग, 1988, पृष्ठ 013*
13. *भारती, अंधा युग, 1988, पृष्ठ 26*
14. *मेहता, महाप्रस्थान, 1975, पृष्ठ 086*